आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में नारी - संवेदना और पर्यावरण चेतना

कविता

स्नातक शोधार्थी
संस्कृत विभाग
मिरांडा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली

सारांश

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य हो या आधुनिक हिंदी साहित्य, इन दोनों ही विषयों के साहित्य में गद्य काव्य एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में विकसित हुआ है। इस विधा में संवेदनशीलता, सामाजिक चेतना और भावनात्मकता का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान के इस वैज्ञानिक युग में नारी संचेतना और पर्यावरण चेतना जैसे विषय भी साहित्य के प्रमुख विमर्श बन चुके हैं। आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में स्त्री का आत्मसम्मान, उसकी स्वतन्त्रता और सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के साथ - साथ प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की भावना भी स्पष्ट रूप से व्यक्त होती दिखाई पड़ती है। प्रस्तुत शोध - पत्र में आधुनिक गद्य काव्य के संदर्भ में नारी संचेतना और पर्यावरण चेतना के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है।

कूट शब्द

संस्कृत साहित्य, गद्य काव्य, नारी संचेतना, पर्यावरण चेतना, प्रकृति, नारी शक्ति

प्रस्तावना

साहित्य चाहे किसी भी विषय का हो, उसको समाज का दर्पण माना जाता है। जिस प्रकार दर्पण में हम अपनी छवि देखते हैं ठीक उसी प्रकार समकालीन समाज में हो रहे परिवर्तनों को भी एक छवि के रूप में साहित्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संस्कृत भाषा में साहित्य की परंपरा को अत्यंत प्राचीन माना गया है। इसके अंतर्गत संस्कृति, मानवजीवन, समाज और प्रकृति के विविध रूपों का अद्वितीय चित्रण प्राप्त होता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में दर्शन, र्धम और आध्यात्मिक विषयों की प्रधानता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था, परन्तु आधुनिक युग में संस्कृत साहित्य ने आध्यात्मिक विषयों के साथ - साथ सामाजिक तथा समकालीन विषयों को भी अपनाया है। आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में समाज की परिवर्तित होती परिस्थितियों, मानव जीवन की समस्याओं और प्रकृति की महत्ता की विशेष रूप से अभिव्यक्ति की गई है।

आज के समय में दो विषय अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रमुख हो गए हैं। नारी संचेतना तथा पर्यावरण चेतना। नारी संचेतना स्त्री के अधिकारों, उसके आत्मसम्मान और उसकी स्वतन्त्रता के प्रति जागरूकता को व्यक्त करती है, जबकि पर्यावरण चेतना पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर देती है। इन दोनों ही विषयों का अपना - अपना महत्व है इसलिए आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में इन दोनों विषयों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

<u>शोध लेखन के उद्देश्य</u>

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य अर्वाचीन संस्कृत वांग्मय में निहित नारी संचेतना और पर्यावरण चेतना का समीचीन अध्ययन तथा विश्लेषण करना है। इस शोध पत्र के अन्तर्गत विशिष्ट उद्देश्य सम्मिलित किए गए हैं -

1. आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य की नवीन पद्धतियों पर विशिष्ट रूप से ध्यान आकृष्ट किया गया है जिससे यह समझा जा सके कि समसामयिक ग्रन्थकार किस प्रकार अपनी रचनाओं में सामाजिक और पर्यावरणीय विषयों को स्थान दे रहे हैं।

2. नारी संचेतना के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है, जैसे - नारी के अधिकार, उसकी सामाजिक स्थिति, स्त्री संघर्ष, आत्मनिर्भरता तथा उसके मनोवैज्ञानिक अनुभवों का अध्ययन।

3. पर्यावरण चेतना के स्वरूप और अभिव्यक्ति का परीक्षण किया गया है जिससे गद्य काव्य में निहित प्राकृतिक सौन्दर्य, पर्यावरण संकट तथा संरक्षण से संबंधित भावों को समझने में सहायता मिलती है।

4. नारी एवं प्रकृति का अंतर्संबंध यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति और नारी को किस प्रकार एक समान संवेदनात्मक तथा प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है।

5. आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य समाज में कितने प्रभावी रूप से जागरूकता का प्रसार करता है, इस दृष्टि से भी समसामयिक सामाजिक संदर्भों में साहित्य की भूमिका का मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है।

6. साहित्य किस प्रकार दो महत्वपूर्ण विषयों (नारी सशक्तिकरण एवं पर्यावरण संरक्षण) के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।

संस्कृत गद्य काव्य का स्वरूप

गद्य काव्य साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें गद्य और कविता के गुणों का समावेश होता है,जिसमें भाषा गद्य की भांति प्रभावपूर्ण और सरल होती है। साथ- ही- साथ उसमें लय, सौंदर्य और भावनात्मकता की भी विद्यमानता होती है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में गद्य काव्य का आरम्भ बीसवीं शताब्दी से माना जाता है। इस काल में संस्कृत साहित्य के अनेक विद्वानों ने आधुनिक सामाजिक समस्याओं के साथ - साथ परंपरागत विषयों को भी स्थान दिया है। आधुनिक गद्य काव्यों में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदनाएं, नारी शक्ति, स्त्री आत्मसम्मान और प्रकृति के प्रति प्रेम - भाव इत्यादि विषयों का अत्यंत मनोरम चित्रण और समन्वित रूप प्रस्तुत किया है।

नारी संचेतना की अवधारणा

नारी संचेतना अर्थात् अपने अधिकारों, स्व - अस्तित्व और अपनी स्वतंत्रता के प्रति स्त्री में जागरूकता का विकास होना। ये संचेतना स्त्री को सामाजिक रूढ़ियों और बंधनों से विमुक्त होकर स्वयं के जीवन का निर्णय स्वयं लेने के लिए प्रेरित करती है।

भारतीय समाज में लंबे अंतराल तक स्त्रियों को एक सीमित दायरे में रखा गया। उन्हें शिक्षा और सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया था, परन्तु आधुनिक युग में स्त्रियों में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की भावना विकसित होने का मुख्य कारण शैक्षणिक और सामाजिक जागरूकता है।

संस्कृत साहित्य ने सदैव नारी को उत्कृष्ट एवं सम्मानित स्थान प्रदान किया है। प्राचीन ग्रंथों में नारी को "शक्ति" और "माता" के रूप में सम्मान दिया गया है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्रियों को दिया गया सम्मान ना केवल प्रतीकात्मक है, अपितु समाज की वास्तविक समानता के रूप में भी प्रदर्शित होता है।

आधुनिक गद्य काव्य (द्वा सुपर्णा) में नारी संचेतना

अर्वाचीन संस्कृत गद्य काव्य में नारी को न केवल पारम्परिक भूमिकाओं तक सीमित रखा गया, बल्कि उसको एक जागरूक, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है। आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों की श्रृंखला में एक नाम "रामजी उपाध्याय" का भी लिया जाता है। रामजी उपाध्याय ने अपने आधुनिक गद्य काव्य "द्वा सुपर्णा" के उत्तर भाग में कौमुदी के जीवन की समस्याओं, उसके संघर्ष और उसके आत्मसम्मान को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। इस गद्य काव्य में कौमुदी और रुक्मिणी केवल त्याग की प्रतिमा न होकर, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरकर हम सबके समक्ष आई हैं।

द्वा सुपर्णा में नारी संचेतना निम्न रूपों में दिखलाई देती है-

१.समान अधिकारों की मांग

स्त्री स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता और शिक्षा की मांग अर्वाचीन संस्कृत गद्य काव्य में महत्वपू**र्ण** विषय बनकर उभरे हैं। इस काव्य में लेखक द्वारा स्त्री और पुरुष के बीच समानता की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तुत गद्य काव्य में लेखक के द्वारा कौमुदी और सुदामा दोनों को शिक्षित दिखलाया है। काव्य में इस प्रसंग का लेखक द्वारा उल्लेख करने का अभिप्राय यह है कि "कौमुदी" को एक नारी होते हुए भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हुआ।[1] यहाँ स्त्री को स्वतंत्र रूप से अपने भविष्य का निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता है। कौमुदी द्वारा ग्राम की उन्नति के लिए उस गाँव की स्त्रियों को शिक्षित करने का प्रण किया गया, ताकि स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हो और अपनी भावी पीढ़ी को भी शिक्षित करने में अपना योगदान दे सकें।

एकमात्र कौमुदी के परिश्रम से सुदामा के गाँव में स्त्रियों की संस्था स्थापित की गई, कन्याओं को शिक्षित करने के लिए पाठशालाएं चलाई गईं, गाँव में वधुओं (बहुओं) के लिए प्रौढ़ शाला का सञ्चालन किया गया, जहाँ पर सभी युवतियाँ एकत्र होकर पुराणेतिहास की कथाओं का श्रवण करती थीं। इस प्रकार कुछ ही दिनों में बड़े - बड़े कार्य वहाँ देखने को मिले और धीरे - धीरे उस गाँव की प्रत्येक स्त्री की ज्ञान की परिधि विस्तृत होती गई। वह ग्राम उस जनपद के अभ्युदय का केन्द्र बन गया और कौमुदी द्वारा सुशिक्षित कन्याएं अन्य गाँव में विवाहोपरांत अपने सर्वांगीण प्रयत्नों से उन्नति करने में सफलता प्राप्त कर पाईं।

विचारपरायण होकर कौमुदी ने सम्पूर्ण ग्राम की आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से अध्ययन करना आरम्भ किया और इस निष्कर्ष पर पहुँची कि वह उस गाँव में वस्त्र का उत्पादन करके वस्त्र की दृष्टि से लोगों को स्वावलम्बी बनाएंगी।[2] उन्होंने ऐसा व्रत भी लिया कि वह केवल ग्रामवासियों द्वारा निर्मित वस्तुओं को ही ग्रहण करेंगी, अन्य वस्तुओं को नहीं।

1- तथापि दम्पत्योः वेषप्रसाधनाधिभिः प्रकाशितमेवासीत् यत् स्नातकस्य वधूः मथुरातः श्वशुरगृहं गच्छति। पृ.सं.- 99
2- 'यावत् ग्रामीण जीवनोपयोगीनि सर्वाणि वस्तूनि स्वयं नोत्पादयिष्यन्ति,तावत् ते नगराश्रिता एव नगरवासिभिरतिसन्धास्यन्ते इति निष्कर्षमवाप सा।पृ.सं. 114

सर्वप्रथम कौमुदी द्वारा चर्खा चलाकर सूत कातने का कार्य प्रारम्भ किया गया और धीरे - धीरे इस परम्परा को गाँव की अन्य स्त्रियों द्वारा भी अपनाया गया। कौमुदी के आदर्श को स्वीकार कर गाँव की सभी वधुओं ने केवल अपने सूत द्वारा निर्मित वस्त्रों को धारण करने का निर्णय किया।[3] इस प्रकार नारी शक्ति के प्रताप की ये कुछ अनुपम विशेषताएं थीं जो हमें "द्वा सुपर्णा" गद्य काव्य में देखने को मिलीं।[4]

२.आत्मपहचान की भावना

स्त्री को अपनी पहचान और अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक दिखलाने का श्रेय आधुनिक संस्कृत साहित्य के लेखकों को जाता है। आधुनिक समाज में नारी गृहस्थ आश्रम का पालन करने के साथ - साथ सामाजिक कार्यों में भी सम्यक् और स्वतंत्र रूप से अपनी भागीदारी निभाती हैं, जिससे समाज में उनकी एक अलग पहचान बनती है।

"द्वा सुपर्णा" नामक गद्य काव्य में "रामजी उपाध्याय" ने कौमुदी को भी इसी प्रकार की जागरूक स्त्री के रूप में चित्रित किया है। जहाँ समाज में केवल पुरुषों को ही हर क्षेत्र में प्रधानता दी जाती थी, वहाँ अब स्त्रियों को भी उन क्षेत्रों में वरीयता दी जाने लगी है। सुदामा से विवाह के पश्चात् जब कौमुदी सुदामा के साथ उसके गाँव पहुँची तब वह सुदामा के कुटुम्ब और ग्रामवासियों के अभ्युदय के लिए चिन्तित होने लगी।[5] चिन्ता का एकमात्र कारण गांव के लोगों द्वारा दरिद्रता, मलीनता और शिक्षा - हीनता जैसे गंभीर विषयों को ग्राम के अनुकूल समझना और पढ़ने योग्य बालक पाठशाला न जाकर इधर - उधर घूमने अथवा खेलते हुए समय व्यतीत कर देते थे। क्योंकि कौमुदी एक शिक्षित नारी है इसलिए उसको भलीभांति ज्ञान है कि ग्राम की उन्नति अथवा अभ्युदय हेतु ग्रामवासियों की शक्ति तथा परिश्रमपरायणता का किस प्रकार सदुपयोग करवाना है[6], जिससे खेतों में अन्न की समृद्धि हो सके। गाँव की स्त्रियाँ अपने - अपने घरों को अलंकृत करने हेतु सुन्दर मूर्ति तथा चित्रों का निर्माण कार्य स्वयं करने लगीं। ऐसे कई छोटे - छोटे कार्यों के लिए अब उन नारियों को किसी पर आश्रित न होना पड़ा।[7]

3- कौमुदी स्वयं नूतनं चक्रं चालयित्वा सूत्रसर्जनं करोति इति संवादः तस्मिन् ग्रामे विद्युद्धत् प्रसूतोऽभवत् । पृ.सं.- 115

4-कौमुद्या अनुभावस्य किमप्यपूर्वं वैशिष्ट्यमासीत्। पृ.सं.- 116
5-कुटुम्बिनां ग्रामवासिनां च सुखमभ्युदयं च कथं साधयामीति कौमुदी चिन्तापरायणाभवत्। पृ.सं.- 104
6-इमे ग्रामवासिनः शक्तिशालिनः परिश्रमपरायणाश्च सन्ति । पृ.सं.- 105
7-ताः स्त्रियः गृहस्यालङ्करणाय चित्रणं मूर्तिनिर्माणं च स्वयमेव कर्तुं प्रारभन्त। पृ.सं.- 110

अब सुदामा के गाँव की स्त्रियाँ प्रसन्नता और स्वेच्छा से अपनी आत्मपहचान के लिए ग्राम के सौंदर्य - विधान का विचार करने लगीं।[8] उन सब स्त्रियों के विचार, कार्यकुशलता और परिश्रम को देखकर कौमुदी भी अत्यंत प्रसन्न हुई। शीघ्र ही उस गाँव में सब कुछ व्यवस्थित और अत्यंत मनोरम हो गया। जैसे - मैल, गोबर, मल, और पंक इत्यादि स्वच्छीकारण की योजना से साँप, बिच्छू मच्छर आदि का अभाव हो गया, पुराण और इतिहास में वर्णित महापुरुषों के आदर्श की कथाओं द्वारा पारस्परिक सद्भाव का अभ्युदय हुआ, नियमित खान - पान की व्यवस्था से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं समाप्त हुई - यह सब कुछ अनुपम और अपूर्व ही हुआ। कौमुदी की सफल योजनाओं द्वारा वह गाँव तीर्थ बन गया - इस बात पर सभी ने हृदय से नारी शक्ति की प्रशंसा की और दूर - दूर से नारी शक्ति के इस अलौकिक प्रदर्शन को देखने के लिए तथा उस गाँव के अभ्युदय के निरीक्षण हेतु लोग आने लगे। इस प्रकार कौमुदी ने नारी शक्ति का प्रदर्शन सुंदर ढंग से किया।[9]

इस प्रकार प्रस्तुत रचना में आए एक पात्र "कौमुदी" के माध्यम से लेखक सभी स्त्रियों को स्वतंत्र और सम्मानजनक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

पर्यावरण चेतना की अवधारणा

पर्यावरण चेतना का अर्थ है "प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता और उसके संरक्षण की भावना"। वर्तमान के इस वैज्ञानिक युग में औद्योगिकरण ने पर्यावरण को विभिन्न प्रकार से क्षतिग्रस्त किया है। वनों की कटाई, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि जैसी अनेक समस्याएं आज वैश्विव स्तर पर चिन्ता का विषय बनी हुई हैं। ऐसी विकट स्थिति में साहित्य का दायित्व है कि वह समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग, जागरूक और एक जिम्मेदार नागरिक बनाए।

8-'आसां मनसि ग्रामस्य दुर्दर्शनीयतामपाकर्तुं विचारः स्वेच्छातः संजातः' इत्यवधार्य कौमुदी प्रहृष्टा बभूव।

9-दूरदूरतोऽपि जनाः तस्य ग्रामस्याभ्युदयं श्रुत्वा 'कथं कीदृशं चेदं संवृत्तम्' इति जिज्ञासमाना ग्रामनिरीक्षणाय समागच्छन्ति स्म।

संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना की अवधारणा

पर्यावरण जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्राकृतिक जगत में विद्यमान हर वह तत्त्व जो प्राकृतिक होता है अर्थात् उन तत्वों में मानव द्वारा कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। पर्यावरण अनेक दृष्टियों से अपनी महत्ता को प्रकट करता है क्योंकि इसमें निहित तत्त्व इस भूमि पर निवास करने वाले प्रत्येक प्राणी को संसाधन प्रदान करने में सहायता करते हैं, जिसकी सहायता से हर मनुष्य सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। अथर्ववेद में कहा भी गया है -

"सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।"[10]

अर्थात् यह समस्त विश्व वृहत्, सत्य, ऋत इत्यादि उपादानों पर आधारित है। सत्य और ऋत में ब्रह्माण्डस्थ समस्त शाश्वत तत्त्वों सूर्य, चन्द्र आदि के साथ ही मानव, पक्षी, वनस्पति जगत् तथा पुरो दृश्यमान् समग्र प्राकृतिक तत्त्वों की गणना की जाती है।

अम्बिकादत्तव्यास जी के स्वरचित उपन्यास 'शिवराजविजयः' में पर्यावरण के महत्त्व को स्वीकार किया गया और सहृदयों को समझाने का प्रयत्न भी किया है। उनके इस उपन्यास में प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण बड़े ही मनोरम ढंग से किया गया है।

संस्कृत वाङ्मय में प्रकृति के प्रति गहन श्रद्धा और सम्मान की भावना दिखलाई देती है। उपनिषदों, वेदों और पुराणों में प्रकृति को देवता के समान ही सम्मान दिया गया है। पृथ्वी, अप, तेज, वायु तथा आकाश को जीवन के आधार स्वरूप में स्वीकृति दी गई है। नदियों और वृक्षों को भी पवित्र तथा पूजनीय माना गया है। संस्कृत साहित्य जगत में यह विचार पुनः - पुनः जागृत होता है कि प्रकृति के बिना मनुष्य जीवन असम्भव है।

10- अथर्ववेद 12/1/1

<u>आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य (शिवराजविजयः) में पर्यावरण चेतना</u>

अम्बिकादत्तव्यास जी द्वारा रचित "शिवराजवीजयः" नामक उपन्यास में पशु- पक्षियों को जीवन का आधार स्वीकार कर उनका सुन्दर चित्रण चित्रित किया गया है यथा –

पक्षियों का वर्णन करते हुए व्यास जी ने कहा कि एक तलहटी से दूसरी तलहटी पर पंखों को हिलाते हुए, चोंच चलाते हुए, गर्दन टेढ़ी करते हुए, खुजलाते हुए, रोमाञ्चित होते हुए, कूजते हुए, उड्डीन और सण्डीन गति से उड़कर जाते हुए गौरैया, नीलकण्ठ, कबूतर, चक्रवाक, काक, शुक, क्रौञ्च और कुरर पक्षियों की शोभा देखते ही रह जाते हैं। इस प्रकार पशु - पक्षियों का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण व्यास द्वारा किया गया है। जब शिवाजी का दूत घोड़े पर जा रहा होता है उस समय घोड़े की थकावट का वास्तविक वर्णन किया गया है -[11]

घोड़े की थकावट का स्वाभाविक चित्रण करते हुए कहते हैं घोड़ा फेन गिराता हुआ, कंधा कंपाता हुआ, हिनहिनाहट से अधिक परिश्रम को प्रकट करता हुआ, पसीने से भीगा हुआ, पुरिष गिराता हुआ, पसीने के सूख जाने पर क्षण - भर में ही अपने परिश्रम को भूलकर चलने का अनुरोध करता हुआ, टापों के अग्रभाग से भूमि खोदता हुआ, पूँछ हिलाता हुआ पुनः सवार के सम्मुख चलने की इच्छा प्रकट करने लगा। पशु - पक्षियों के माध्यम से उपमा देने का सफल प्रयत्न भी व्यास जी द्वारा अपने उपन्यास "शिवराजविजयः" में किया गया है। इस प्रकार जंगली तथा पालतू पशु - पक्षियों की क्रीडाओं का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण व्यास जी के उपन्यास में देखने को मिलता है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने "शिवराजविजयः" नामक उपन्यास में राजनैतिक पक्ष के साथ - साथ पर्यावरण चेतना को भी विशेष महत्त्व दिया है।[12]

11- "पादाच्च पादं सपत्र - कम्पनम्, सचञ्चु - चाञ्चल्यम्, सग्रीवाभङ्गम्, सपक्षति - कण्डूयनम्, सतनुरूहस्फुरणम्, सकूजनम् च प्रडीनोड्डीन - सण्डीनैरूड्डीय गच्छतां पृ.सं.- 199

12-"अश्वश्च फेनान् पातयन् कन्धरामुद्धूनयन् ह्नेषा - रवैश्चिर - परिश्रमं प्रकटयन् प्रस्यन्द – जल" पृ.सं.- 35

आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में प्रकृति का चित्रण केवल सौन्दर्य के लिए ही नहीं अपितु पर्यावरण संरक्षण के संदेश के रूप में भी किया गया है। आधुनिक रचनाकारों द्वारा प्रकृति के विनाश पर चिन्ता व्यक्त करते हुए मनुष्य को प्रकृति के साथ सामञ्जस्य स्थापित करने की प्रेरणा दी गई है। आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में सूर्य, नदी, पर्वत, पेड़ - पौधे, पशु - पक्षियों के महत्त्व को विशिष्ट रूप से रेखांकित किया गया है। अनेक आधुनिक साहित्य के विद्वानों द्वारा यह अनुभव किया गया कि वर्तमान के इस वैज्ञानिक युग की अंधी दौड़ में मनुष्य प्रकृति को विभिन्न रूपों में हानि पहुँचा रहा है। यदि यह स्थिति निरन्तर चलती रही तो मनुष्य जीवन भी संकट ग्रस्त हो जाएगा।

<u>नारी और प्रकृति का अंतर्संबंध</u>

नारी और प्रकृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं क्योंकि ये दोनों ही सृजन तथा पालन की प्रतीक मानी गईं हैं। साहित्य में बहुधा स्त्री को प्रकृति के रूपक के रूप में चित्रित किया जाता है।_अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में एक विचार हमारे समक्ष आता है कि जिस प्रकार स्त्री का शोषण होता आया है उसी प्रकार प्रकृति का भी निरन्तर दोहन किया जा रहा है। इसीलिए स्त्री स्वतन्त्रता और पर्यावरण संरक्षण दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह विचार अन्य विषयों के आधुनिक साहित्य में "इको फेमिनिज्म" के रूप में विकसित हुआ, जिसमें नारी और प्रकृति के गहन अंतर्संबंधों को विधिवत् रूप से समझने का प्रयास किया जाता है।

शोध के परिणाम

शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होगा कि आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में स्त्री पारम्परिक सीमाओं से ऊपर उठकर एक सशक्त, स्वतंत्र और विचारशील नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है।

1. शोध से यह सिद्ध होगा कि नारी के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक संघर्षों को अत्यन्त यथार्थ और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध यह दर्शाएगा की आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में , प्रकृति प्रेम भाव, पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिक सन्तुलन पर गम्भीर चित्रण किया गया है।
3. शोध से यह ज्ञात होगा कि समकालीन साहित्य के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के बीच संतुलित एवं संवेदनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है।
4. पाठकगण के समक्ष यह परिणाम आएगा कि प्रत्येक नारी और प्रकृति दोनों ही समान रूप से सहनशील, सृजनशील और संरक्षण योग्य माने गए हैं एवं दोनों के शोषण की समस्या भी एक - दूसरे के समान है।
5. सहृदयों के समक्ष यह निष्कर्ष आएगा कि साहित्य संस्कृत गद्य काव्य समाज में पर्यावरण संरक्षण और नारी अधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
6. यह शोध भावी शोधकर्ताओं के लिए नारी संचेतना और पर्यावरण चेतना जैसे विषयों का मार्ग प्रदान करेगा।

वर्तमान युगीन प्रासंगिकता

आज के समय में नारी सशक्तिकरण तथा पर्यावरण संरक्षण दोनों ही वैश्विक स्तर पर ज्वलंत विषय बने हुए हैं। शिक्षा, साहित्य और मीडिया समाज में इन विषयों के प्रति जागरूकता का प्रसार करने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य के लेखक इन दोनों विषयों को अपनी कलम से लिखकर समाज को संवेदनशील बनाने का प्रयत्न करता है। लेखकों का यह लेख पाठक वर्ग को सन्देश देता है कि एक समाज का, एक राष्ट्र का, एक देश का वास्तविक अभ्युदय तभी सम्भव है जब प्रत्येक स्त्री को सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा और प्रकृति का संरक्षण किया जाएगा।

उपसंहार

आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य में नारी संचेतना और पर्यावरण चेतना का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह साहित्य केवल भावनात्मकता और सौन्दर्य का माध्यम ही नहीं अपितु सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता का आधार भी है। नारी संचेतना प्रत्येक नारी को अपने अधिकारों और आत्मसम्मान के प्रति जागरूक बनाती है जबकि पर्यावरण चेतना हर मनुष्य को प्रकृति संरक्षण के प्रति प्रेरित करती है। आधुनिक गद्य काव्य इन दोनों विषयों के समन्वित रूप को प्रस्तुत कर समाज को उन्नति की दिशा की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक संस्कृत गद्य काव्य समानता, मानवीय मूल्यों तथा पर्यावरण संतुलन को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

"नारी और प्रकृति दोनों ही सृजन की शक्ति हैं, इसलिए इनका सम्मान और संरक्षण ही मानवता का भविष्य है।"

<u>सन्दर्भ सूची</u>

1. राजमणि पांडेय, द्वा सुपर्णा, भारतीय संस्कृत संस्थान महामनापुरी, वाराणसी
2. प्रतिभा जैन, संगीता शर्मा (सम्पादक) भारतीय स्त्रीः सांस्कृतिक सन्दर्भ, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1998, पृष्ठ-225
3. ए.एस. अल्तेकर, पोजिशन ऑफ वुमेन इन द हिन्दू सिविलाइजेशन, द कल्चर पब्लिकेशन हाउस, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस, 1933 पृष्ठ 11-12
4. पुष्पावती खेतान, नारी अभिव्यक्ति और विवेक, पृष्ठ-13
5. प्रतिभा जैन, संगीता शर्मा (सम्पादक) भारतीय स्त्रीः सांस्कृतिक सन्दर्भ, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1998, पृष्ठ-261
6. सुखमय भट्टाचार्य, महाभारतकालीन समाज, पुष्पा जैन (अनुवादिका) - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966 आशारानी व्होरा भारतीय नारीः दशा, दिशा पृष्ठ-173
7. डॉ० शान्ति कुमार नानूराम व्यास रामायण कालीन समाज, सत्साहित्य प्रकाशन, 1958 पृष्ठ 145
8. डॉ.रमाशंकर मिश्र, शिवराजविजय, चौखंबा प्रकाशन ,अष्टमो **निश्वास**

9. डॉ.रमाशंकर मिश्र, शिवराजविजय, चौखंबा प्रकाशन ,चतुर्थ **निश्वास**